॥ ॐ ॥

समाज के नाम जागृति सन्देश

व्यास पीठ के वक्तागण

सावधान

उद्‌बोधक-

तत्त्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज 'अच्युत'

श्री महन्त - उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-३४२००६

सामाजिक जागृति के लिये उत्तम आश्रम के अनमोल प्रकाशन

अचलराम ग्रंथावली

(तीन भागों में)

रचना - **स्वामी श्री अचलरामजी महाराज**

व्याख्याकार : **स्वामी रामप्रकाशाचार्य 'अच्युत'**
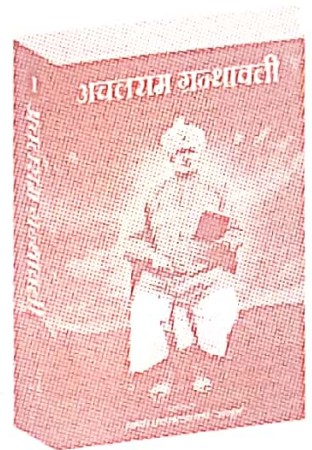
परमगुरु स्वामी अचलरामजी महाराज द्वारा विरचित 'अचलराम भजन प्रकाश' के भजनों में ज्ञान, उपासना एवं जीवन के कर्मयोग भक्ति, वेदान्त, ज्ञान, साधनादि विषयों के भजनों की यथार्थ एवं प्रत्यक्ष अनुभूत पीयूष ज्ञान वर्षिणी व्याख्या तत्त्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज द्वारा की गई है जो कि मुमुक्षुओं के लिये अत्युपयोगी है।
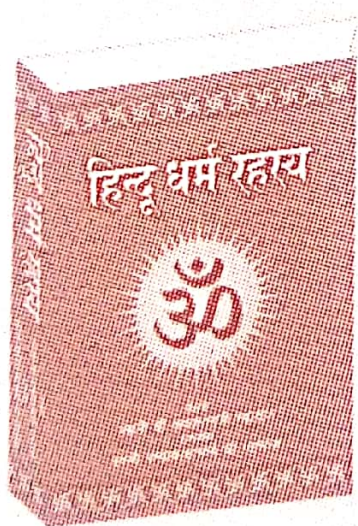
हिन्दू धर्म रहस्य

लेखक - **स्वामी श्री अचलरामजी महाराज**

एकमात्र ऐसी पुस्तक जिसमें सनातन धर्म के प्रत्येक विषय पर शोधपूर्ण विश्लेषण किया गया है, हिन्दूधर्म-प्रचार, अछूतोद्धार, वेदोक्त साम्यवाद, वेदोक्त किसान, स्वतन्त्रता, स्वराज्य-साम्राज्य की प्राप्ति, अस्पृश्यता, सती प्रथा, वर्ण-व्यवस्था, मातृभाषा, मातृ सभ्यता और संस्कृति तथा राष्ट्रसेवा आदि आर्य धर्म के कई अनछूये पहलुओं पर गहन विश्लेषण करता यह ग्रन्थ अस्सी वर्ष के बाद अब उपलब्ध हो गया है।

ॐ रां रामाय नमः

व्यास पीठ के वक्तागण

सावधान

सनातन धर्म तथा मानवता की रक्षा का दायित्व
धर्माचार्यों के वक्तव्य एवं कर्त्तव्य पर निर्भर है।

लेखक-

श्रीवैष्णव विरक्त गूदड़ गद्दी जोधपुर के श्रीमहन्त
अनन्त श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज के कृपापात्र
शताधिक सनातन धर्मग्रन्थों के रचयिता, लेखक एवं सम्पादक
(धर्मवारिधि, कविभूषण, विद्यावाचस्पति, साहित्य-शास्त्री, रामायणाचार्य)

स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज

श्री महन्त—उत्तम आश्रम, कागातीर्थमार्ग, जोधपुर-6

भक्तों के सहयोग से—

प्रकाशक :

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर (राज.)

फोन /फैक्स : 0291-2547024

मोबाइल : 94144-18155

E-mail: uttamashram@gmail.com

ISBN : 978-81-88138-57-9

प्रथम संस्करण : वि. सं. 2072 सन् 2015 ई.

दशहरा पर्वोत्सव के पावन पर्व के उपलक्ष में समाज के हित में प्रचारित

मूल्य : 20.00

टाइपसेटिंग :

उत्तम कम्प्यूटर, जोधपुर. 8758817525

रचयिता की श्यामानन लेखनी से......

अपनी बात

उत्तम आर्य भूमि भारत अनादि काल से सनातन धर्म का मूर्धन्य राष्ट्र रहा है। यहाँ अनेक सिद्ध साधक, अनुभव सिद्ध महापुरुष, ऋषि-मुनि, अध्येता, साहित्यकार, कर्म-उपासना-ज्ञान-भक्ति योग के उपासक, न्याय प्रणेता तथा आध्यात्मिक जगत के अध्ययवसायी विद्वान होते रहे हैं। ये सभी महापुरुष मानव जीवन की प्रगति के मार्गदर्शन में अग्रणीय रहकर सामाजिक, आर्थिक, वैयक्तिक एवं राष्ट्रोत्थान आदि नाना विषयों में उपदेश देते रहे हैं।

विषय दृष्टि से वेद-विभाजन, वेदार्थ ज्ञान के लिए वेदांग, षट् शास्त्र-दर्शन, नाना उपनिषद् एवं स्मृति शास्त्रों के अथाह भण्डार के लेखन द्वारा मानवोचित दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या इत्यादि में भौतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के साथ लौकिक-पारलौकिक तथा आलौकिक-आत्म चिन्तन से कल्याण पद साधन का ज्ञान अवगत करवाया है। जिसे प्रबुद्ध मनीषीगण विद्वान् समाज के दिशा-दर्शन हेतु व्यास पीठ के रूप में सम्भाल रहे है।

अपूर्व एवं प्रमुख साहित्यक मूल ग्रन्थों को दो हजार वर्ष पूर्व कश्मीर की घाटियों में घुड़सालों के पलित घोड़ों के दाना पकने की भट्ठियों में छः महीने तक जलाया गया और विद्वानों को तलवार के भय या धन की थैलियों से खरीद करके तथाकथित आधुनिक पुराण-स्मृति इत्यादि ग्रन्थों के हेर-फेर में जन्म जाति को बढ़ावा दिया गया, जो सर्वथा शास्त्रीय रूपान्तरण से नियम विरुद्ध है। तब चोटी-जनेऊ उतरवायी जाती थी। वर्ण, धर्म-आचरण कर्त्तव्यों को इतिश्री, स्वाहा करके 'फूट डालो राज करो' की राजनीति में जन्म जाति को प्रोत्साहन दिया गया था। जिसे आज सामाजिक कलंक और विद्रोह का मूल कारण कह सकते है। जन्म जाति में केवल चौरासी लाख जाति ही ईश्वरीय सृष्टि में है जो कभी बदलती नहीं है और वर्ण-धर्म आचरण तथा कर्तव्य पर निर्धारित थे। इसी कारण वसिष्ठ, पाराशर इत्यादि की गणना ब्राह्मण वर्ग में हुई। अन्यथा जन्म-जाति से सभी अन्त्यज ही थे और सनातन धर्म के मूल धर्मशास्त्र आज इन्हीं के नाम से प्रचारित है।

भारतवर्ष में व्यास पद पर सुशोभित अठाईस महापुरुष हुए हैं। जिनके नाम से समाज को उद्‌बोधन दिया जाता है। उनमें से अधिकांश अन्त्यज शूद्र अर्थात् वर्णसंकर ही थे। उनके जन्म-जाति

पर विचार किया जाय तो कतिपय वसिष्ठ, शक्ति, पाराशर, श्रीकृष्णद्वैपायन (व्यास) शुकदेव, लोमहर्षण (सूतजी), काग-भुशुण्डि, उग्रश्रवा इत्यादि सब जन्म से अन्त्यज (शूद्रज) ही जाने जायेंगे। किन्तु सनातन धर्म का प्रांगण 'गुणकर्मविभागश:' गीता के इस वाक्य से गुण और कर्मों से वर्ण का समर्थक रहा है जो सदैव गुण और कर्म अनुसार परिवर्तनीय है। जाति शब्द भाव भ्रमित चौरासी लाख देह धारकों को व्याकरण व्युत्पत्ति में जाति वाचक संज्ञा का सम्बोधन तथा प्रतीक रहा है।

आद्य जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्यजी के जीवन का अन्तिम उपदेश द्वादश शिष्यों के प्रति कहा गया था कि "समस्त शास्त्रों का सार भगवत् स्मरण है, यही सन्तों का जीवन आधार है। शिखा-सूत्र के आधार पादज और अन्त्यज है। हे भाई ! पैरों को काट कर समाज को पंगु मत बनाना।"

यही निर्देश भारत के प्रथम गृहमन्त्री गोविन्दवल्लभ पन्त के थे - "अस्पृश्यता हमारे देश व धर्म का सब से बड़ा काला कलंक है।"

ज. गु. रामानन्दाचार्य स्वामी भगवदाचार्य जी का सम्बोधन तथा '**जाति पांति पूछे नहीं कोई, हरि भजे सो हरि का होई॥**'

भारतीय संविधान भाग-3 धारा 17 और अस्पृश्यता निवारण कानून एवं सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णान् के विचार तथा भारत के प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी के कथन क्या आपने पढ़े है ?

अतः व्यास पीठ के प्रवक्ता प्रबुद्ध-मनीषी (कथावाचक) का दिशा बोध एकता सूत्र, सामाजिक संगठन, आत्मोन्नति के चरित्र बोधपूर्ण होने चाहिये। अन्यथा वह दिन दूर नहीं होगा कि आपके धर्मशास्त्रों और कथावाचकों सहित व्यास पीठ की रक्षा करने वाला कोई नहीं रहेगा। समय की गति के साथ आज के परिवेश में विविध संगठनों के विरोध को झेलने की शक्ति का अभाव दर्शन आप दे रहे हैं। इसे समझने की आवश्यकता है।

मानसिंह संसार में, हंस स्वरूपी सन्त।
इन हंसों के भेष में, बुगला फिरे अनन्त॥

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)
जोधपुर
आद्य ज.गु. रामानन्दचार्य जयन्ति
वि.क्र. २०७२ माघ वदि ७

भवान्निष्ठ
स्वामी रामप्रकाशाचार्य
'अच्युत'

श्री हरि गुरु सच्चिदानन्दाय नमः

व्यास पीठ के वक्ता गण सावधान !

आर्यवृत भारत सदा धर्मप्रधान देश रहा है। यहाँ विभिन्न उपासना पद्धतियों का समावेश रहता आया है। यहाँ बृहस्पति एवं शुक्राचार्य के शिष्यों (देव-दैत्यों) की बहुतायत रही और है। सनातन धर्म प्रांगण में प्राच्यकाल से अद्यावधि पर्यन्त अनन्त ऋषि-महर्षि, राजऋषि, सन्त, साधक, विद्वान्, शास्त्रज्ञ, अनुभवशील वाणीपुरुष होते आये हैं और उन्हीं की दयामय कृपांकुर से भारत के प्रत्येक ग्रामीण भाषी देहातिक किसान के मुख से भी वेद, उपनिषद्, पुराण एवं ऐतिहासिक तथ्यों के सिद्धान्त वाक्य प्लवित है। यह उन्हीं महापुरुषों के दिये संस्कार ग्रामीण कुटी में आवासित दरिद्र नारायण में भी जाग्रत है। उनके हृदय भाव में भी सनातन धर्म के प्राण कर्म, उपासना एवं ज्ञानकाण्ड की भागीदारी निभाने की ललक है अर्थात् वह भी धार्मिक कार्यक्रम कथा-सप्ताह, कीर्तन, दान,

हवन इत्यादि कृत्यों में सामूहिक रूप से सम्मिलित होना अपना कर्तव्य मानता है। उनका श्रद्धाभाव, विश्वासमय धन सदा धर्म के प्रति अटूट है, उनकी आस्थाएं धनवान सेठों के भौतिक दिखावे से भी कहीं अधिक पवित्र और दृढ़ हैं और यह वास्तविकता है।

ऐसी भावनाओं की अवहेलना व्यास पीठ से होती है। उन गरीब-शोषित वर्ग के लोगों की उपेक्षा करते हुए हमारे सनातन धर्मध्वजी ठेकेदार व्यास पीठ पर बैठे वक्तापुरुष यदा-कदा व्यासमंच से या संचालन समिति से उनके प्रति वक्तव्य देते पाये जाते हैं कि 'हमारी कथा के ज्ञानयज्ञ के कर्मकाण्ड रूप हवन, ब्रह्मभोज सत्संग-प्रसाद में अन्त्यज (शूद्र) अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति में सूचीबद्ध लोगों का चन्दा नहीं लेना है अथवा उनकी भागीदारी नहीं रखनी है। उनका अर्थदान यज्ञ-प्रसाद में उपयुक्त नहीं है। इस प्रकार की अनैतिक और धर्मविरुद्ध बातें करते आसानी से देखे जा सकते हैं। इस सम्बन्ध में इस प्रकार की शिकायतें भी जनता जनार्दन

आस्थावान श्रद्धालुओं द्वारा हमें सुनने को मिलती रही है। जैसे कि–

1. व्यास पीठ की गद्दी पर शूद्रों का अधिकार नहीं है।
2. गीता-रामायण इत्यादि धर्मशास्त्रों को रखने या पढ़ने का उन्हें अधिकार नहीं है।
3. शूद्रों को यज्ञोपवीत पहनने, गायत्री पढ़ने, हवन करने, मन्दिर में दर्शन-पूजन करने तथा गृह-प्रवेश इत्यादि धार्मिक कृत्य के अधिकार नही है। किन्तु शूद्र भेंट में अर्थ (धन), धान्यादि सब कुछ हमें दे सकते हैं।
4. ऐसे ही सार्वजनिक पूजा-पाठ, हवन-सहभोज में अन्त्यजों से अर्थदान नहीं लिया जाय इत्यादि।

ऐसे उद्‌बोधक व्यास-पीठ पर बैठने वालों को शर्म के साथ यह भी फरमान देने में कंजूसी नहीं हो सकेगी कि एक दिन ऐसा भी कहने की सम्भावना हो जाय कि–

1. हमारे व्यतव्य-कथा में आने या श्रवण करने का अधिकार केवल द्विजाति का ही है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और

वैश्य समाज के अतिरिक्त अन्य कोई भी शूद्र या अतिशूद्र (अन्त्यज) समाज का व्यक्ति नहीं आये। अथवा–

2. उन्हें सनातन धर्म में रहने का भी अधिकार नही है।

3. उनके हाथ का स्पर्श किया हुआ अन्न, धन, जल, लकड़ी, लोहा, पत्थर, कागज-कलम, किताबें आदि किसी भी वस्तु का तथाकथित ब्राह्मणादि जन्म जाति द्विजाति के लोग उपयोग नहीं करेंगे ?

हे धर्म के ठेकेदारों ! समाज में अग्रणी व्यासपीठ पर बैठने वालों को शर्म आनी चाहिये कि ऐसा करने/कहने के बाद आप सनातन धर्म, अपने सवर्ण समाज, व्यास पीठ के अस्तित्व तथा धर्मशास्त्रों की रक्षा कर सकोगे ? महा अपराध कर रहे हो, चन्द प्रलोभन में धर्म का दोहन कर के राष्ट्र और समाज में घातक बनने का प्रयास कर रहे हो !

ऐसे शर्मसार, मानवता के विरुद्ध, सनातन धर्मशास्त्रों की अवज्ञा करके फरमान करने वाले व्यास पीठ के विद्वानों को किंचित् प्राचीन सनातन धर्मशास्त्रों के मूल सिद्धान्त एवं उनके

मूल रचयिता, वक्तागण और उनकी जन्म-जाति तथा प्राचीन शास्त्रीय कर्तव्य की वर्णाश्रम व्यवस्था को जान लेना चाहिये और भारत के सम सामयिक इतिहास की बदलती करवटों में दो हजार वर्ष के पूर्वकालीन, मध्यकालीन और वर्तमान के इतिहास के साथ सामयिक संविधान-नियमों को भी पढ़कर जान लेने चाहिये। पूर्वातिपूर्व सनातन धर्म की व्यवस्था तथा अभी वर्तमान धर्म साहित्य की भाषा, रहस्यवाद में वास्तविकता को भी अदृष्ट नहीं रखें। अतः जन्म से अथवा कर्म से इस विषय को जानने के लिए निम्न साहित्य का अध्ययन अवश्य करें।

1. रामस्नेही धर्म प्रकाश– सिंहस्थल/खेड़ापा से प्रकाशित प्राचीन साहित्य
2. हिन्दू धर्म रहस्य–स्वामी अचलरामजी महाराज कृत (उत्तम प्रकाशन जोधपुर)
3. भारतीय समाज दर्शन – जो सनातन शास्त्रों से प्रमाणित है। (उत्तम प्रकाशन जोधपुर)
4. संस्कार चन्द्रिका– प्राचीन के सनातन शास्त्रों से प्रमाणित

है। (उत्तम प्रकाशन जोधपुर)

5. भारत का व्यास ? – ऋषियों के जीवन जो सनातन धर्म शास्त्रों से प्रमाणित है।(उत्तम प्रकाशन जोधपुर)

6. तत्त्वज्ञान कैसे हो ? –स्वामी रामसुखदासजी (गीताप्रेस द्वारा उपलब्ध है।)

7. महर्षि दयानन्द सरस्वती की रचनाएं - 'सत्यार्थ प्रकाश' आदि।

8. प्राचीन सन्त वाणी साहित्य की विविध पुस्तकें, तर्कसहित इत्यादि आर्य धर्म के आर्ष ग्रन्थ पढ़कर अपने विचारों का परिमार्जन करें और समाज की घटिया सोच के विचारों की करवट को बदले।

व्यास पीठ की रचना एवं स्थापना

इस तथ्य पर भी चिन्तन करे कि आधुनिक सनातन धर्म साहित्य के द्वारा आपको व्यास पीठ देने वाले कौन थे ? हिन्दू(सनातन) आर्यधर्म की आस्था का प्रमुख स्रोत, धार्मिक कथा साहित्यक ग्रन्थों में प्रमुख सर्वाधिक पठनीय क्या है ? इन धर्मशास्त्रों के रचियता कौन थे ? और उनकी जन्म जाति क्या थी ? इन तीन प्रश्नों का उत्तर चिन्तनीय होगा –

1. श्री कृष्णद्वैपायन (व्यासजी) – इनका जन्म वसिष्ठ, शक्ति के वंश में पाराशर महर्षि के द्वारा हुआ। निषाद कन्या सत्यवती का पाराशर ऋषि के साथ संसर्ग से व्यास का जन्म हुआ और उसी योजनगन्धा सत्यवती का विवाह शान्तनु के साथ होने के बाद सत्यवती के गर्भ से जो सन्तान उत्पन्न हुई, उसी से कौरव-पाण्डवों की वंश परम्परा चली। वेदव्यास द्वारा रचित धर्म साहित्य सर्वश्रेष्ठ सनातन धर्म का मूल आधार है। जो निम्न हैं -

(1) अठारह पुराण (विष्णु, नारद, गरुड, पद्म, वराह, भागवत - सत्त्वगुण प्रधान; ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, भविष्य, वामन - रजोगुण प्रधान; मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कन्द, अग्नि-तमोप्रधान), (2) महाभारत (18 पर्वों में), (3) श्रीमद्भगवद्गीता, (4) व्यास स्मृति, (5) उत्तरमीमांसा (वेदान्त दर्शन) इत्यादि सर्वाधिक प्रसारित व्यासपीठ के प्रमुख रचयिता, सृजेता/अध्येता श्री कृष्णद्वैपायन व्यासजी है। इनके चार शिष्य पुराणवेत्ता हुए।

2.वसिष्ठजी के नाम से वसिष्ठ स्मृति, वसिष्ठ हवन पद्धति इत्यादि है। ये गणिका पुत्र/मानस पुत्र नाम से परिचित है।

3. पाराशर– यह वसिष्ठ के पौत्र एवं शक्ति के पुत्र श्वपचा माता से जन्मे, जो निषाद कन्या के पति एवं व्यास के पिताश्री थे। इनके द्वारा पाराशर स्मृति एवं अन्य कई ग्रन्थ निर्मित कहे जाते हैं।

4. वाल्मीकि– यह जन्म से ब्राह्मण रत्नाकर नाम से थे, किन्तु संगदोष से निषाद कुल में पालित एवं विवाहित हुऐ। सनकादि के उपदेश तथा तपोबल से रामायण की रचना कर आदिकवि के नाम से प्रसिद्ध हुए।

5. पक्षिराज गरुड़जी- श्रोता और वक्ता में पक्षी विशेष। काकभुशुण्डि जो भुशुण्डी रामायण (रामकथा) के रचयिता हुए। शिवजी ने भी इनसे हंस रूप में कथा श्रवण की थी।

6. व्यास जी के चार शिष्य, जो विभिन्न कथाओं में अट्ठासी हजार शौनकादि ऋषियों द्वारा नैमिषारण्य क्षेत्र में बारह वर्ष पर्यन्त आयोजित सतसंग ज्ञान यज्ञ में व्यास पीठ के वक्ता रहे।

(क) लोमहर्षण-सूतजी (रोमहर्षण)-पद्मपुराण के अनुसार उग्रश्रवा क्षत्रिय पिता से अन्त्यजा पुत्र रूप में उत्पन्न ये शूद्र थे अर्थात् जन्म से ब्राह्मण नहीं थे, किन्तु ब्राह्मणोचित विद्वता के सर्वोच्च आसन पद पर बैठने के पात्र थे। व्यास आसन पर बैठा व्यक्ति व्यास ही माना जाता है। यह व्यासजी के प्रमुख शिष्य थे।

एक बार बलभद्र जी द्वारा इनकी हत्या करने पर ब्रह्महत्या के पाप से ऋषिवर्ग द्वारा बहुत आहत एवं धर्मदण्ड के भागी हुए और बलभद्र द्वारा पश्चाताप पूर्ण क्षमा याचना सहित

प्रायश्चित्त कर्म किये गये।

तैतीरीय ब्राह्मण (3.4.1) में भी इनका नामोल्लेख पूर्वक परिचय आया है कि यह क्षत्रिय पुरुष तथा ब्राह्मण नारी की प्रतिलोम वर्णसंकर सन्तान है। इनका व्यवसाय रथ चालन, घुड़साल की सेवा था। (वैखानस आगम 10.13 तथा वायुपुराण 1.1.33-34) यह धनिकों की वंशावली लेखन से भट्ट (भाट) थे। इनके लिये वेदाध्ययन सर्वथा वर्जित था। किन्तु वह व्यास पीठ से ऋषि बाहुल्य के वक्ता सर्वश्रेष्ठ पुराणवेत्ता हुए।

(ख) वैशम्पायन - यह व्यास जी के शिष्यों में से एक थे, जिन्होंने पाण्डव वंशज परीक्षित पुत्र जन्मेजय को व्यास रचित महाभारत कथा श्रवण करवाई थी। यह यजुर्वेद के मुख्य अध्येता थे। महीधर ने अपने यजुर्भाष्य में लिखा है कि इन्होंने याज्ञवल्वय आदि शिष्यों को वेदाध्ययन करवाया था और विषयान्तर तैतीरीय उपनिषद् की रचना हुई।

(ग) शुकदेवजी - यह शुकी नामक अन्त्यजा के द्वारा

श्री व्यासजी के पुत्र जो जन्म से शूद्र रहे। जिन्होंने पाण्डव वंशज राजा परीक्षित को श्री व्यास कृत मद्भागवत महापुराण के वक्ता होकर व्यासपीठ से अनेक ऋषियों के समक्ष कथा श्रवण करवाई।

(घ) उग्रश्रवा - लोमहर्षण (सूतजी) के पुत्र भाट वंशज शूद्र होकर भी नैमिषारण्य तीर्थ में ऋषियों के बीच व्यास पीठ के वक्ता होकर पौराणिक कथाऐं सुनाई।

(ड़) सत्यकाम जाबाल - इनके पिता का भी पता नही था। ऐसे ही गौतम ऋषि के पुत्र शरद्वान के तपोशील में विघ्न रूप सरकण्डों पर गिरे वीर्य से कृपाचार्य और कृपी का जन्म होना। (महाभारत 1/36) ऐसे ही भारद्वाज के वीर्य द्वारा दोने से द्रोण का जन्म हुआ, ऐसे ही पशु-पक्षियों से अनेक महर्षियों की उत्पत्ति पर विश्वास किया जा सकता है? छान्दोग्योपनिषद् की कथा पर मानव सृष्टि को हेय दृष्टि से देखने वालों ! कुछ विवेक बुद्धि से चिन्तन करो। व्यास पीठ को लज्जित मत करो।

इनके अतिरिक्त अनेकों शास्त्रवेत्ता महर्षि जैसे – जगद्गुरु के पद पर श्री यामुनाचार्य जी, जगद्गुरु नारायणदासजी (भक्तमाल रचयिता श्री नाभादासजी महाराज) तथा संत कबीर साहेब, संत रविदासजी, स्वामी संतदासजी, संत दरियावजी, संत रामदासजी (खेड़ापा में मेघ पारम्परिक वंशज), संत दयालदास जी, संत पूर्णदासजी इत्यादि सभी अनुभवी तपोशील रहे है। क्या वे जन्म जाति से ब्राह्मण थे ? स्वामी रामसुखदासजी गीता के मर्मज्ञ त्यागी विद्वान् हुए ?

ऐसे ही श्रवण कुमार पितृ भक्त (वाल्मीकि रामायाण 2/63/51) वैश्य पिता शान्तनु द्वारा शूद्र जातीय माता ज्ञानवती के गर्भ से उत्पन्न। क्या ऐसा कोई द्विजाति का प्रमाण है ?

एकलव्य (भील) गुरु भक्त (महाभारत की कथा) क्या कोई ऐसा द्विजाति में गुरु भक्त हुआ ?

मराठा शिवाजी (महाराष्ट्र इतिहास-1627-80 ई.) जो शूद्र होकर भी 51 किले विजय में प्राप्त किये। क्या ऐसे कोई इतिहास पुरुष का उदाहरण है ?

सन्त श्री नानक देवजी के शिष्यों में भाई मर्दाना जी, भाई बालाजी थे, क्या उपरोक्त महापुरुषों के समान कोई गुरु भक्त पुरुष हुआ ?

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेदं पठेत् भवेद् विप्रः ब्रह्म जानाति स ब्राह्मणः ॥

यदि आप को धर्म साहित्य पर विश्वास की दृढ़ता है तो पढिये– व्रजसूचिकोपनिषद् के भाव कि ब्राह्मण कौन ? सनातन धर्म के तत्व दर्शन में 108 उपनिषदों में यह भी एक है, जिन्हे पढ़कर अज्ञान पटल को दूर करे। इस उपनिषद में ऋषि कहते हैं कि 'अब मैं अज्ञान का नाश करने वाला 'वज्रसूची' नामक शास्त्र कहता हूँ, जो अज्ञानियों के लिये दूषण रूप और ज्ञान चक्षुवालों के लिये भूषण रूप है।

'ब्रह्म-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रा इति चत्वारो वर्णास्तेषां वर्णानां ब्राह्मण एव प्रधान इति वेदवचनानुरूपं स्मृतिभिरप्युक्तम्। तत्र चोद्यमस्ति को वा ब्राह्मणो नाम ? किं जीवः ? किं देहः ? किं जातिः ? किं ज्ञानम् ? किं कर्म ? किं धार्मिक इति'

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र– ये चार वर्ण हैं। उन वर्णों में ब्राह्मण मुख्य है। ऐसा वेदों में तथा स्मृतियों में भी कहा गया है। उस विषय में यह शंका उत्पन्न होती है कि ब्राह्मण नाम किसका है ? क्या जीव ब्राह्मण है ? क्या देह ब्राह्मण है ? क्या जाति ब्राह्मण है ? क्या ज्ञान ब्राह्मण है ? क्या कर्म ब्राह्मण है ? अथवा क्या धार्मिक व्यक्ति ब्राह्मण है ?

'तत्र प्रथमो जीवो ब्राह्मण इति चेत्तन्न। अतीतानागतानेकदेहानां जीवस्यैकरूपत्वादेकस्यापि कर्मवशादनेकदेहसम्भवात् सर्वशरीराणां जीवस्यैकरूपत्वाच्च। तस्मान्न जीवो ब्राह्मण इति॥'

जीव ब्राह्मण है–ऐसा नहीं हो सकता। कारण कि पहले हुए और आगे होने वाले अनेक शरीरों में जीव एक रूप ही रहता है। जीव एक होने पर भी कर्मों के कारण अनेक शरीरों को धारण करता है; परन्तु सब शरीरों में जीव एकरूप ही रहता है (इसलिये यदि जीव को ब्राह्मण मानें तो फिर सभी शरीरों के जीवों को ब्राह्मण मानना पड़ेगा)

'तर्हि देहो ब्राह्मण इति चेत्तन्न। आचाण्डालादिपर्यन्तानां मनुष्याणां पाञ्चभौतिकत्वेन देहस्यैकरूपत्वाज्जरामरण-धर्माधर्मादिसाम्यदर्शनाद् ब्राह्मणः श्वेतवर्णः क्षत्रियो रक्तवर्णो वैश्यः पीतवर्णः शूद्रः कृष्णवर्ण इति नियमाभावात्। पित्रादिशरीरदहने पुत्रादीनां ब्रह्महत्यादि दोषसम्भवाच्च। तस्मान्न देहो ब्राह्मण इति।'

तो क्या देह ब्राह्मण है ? नही, ऐसा भी नहीं हो सकता। चाण्डाल से लेकर मनुष्य पर्यन्त सबके शरीर पांच भौतिक होने से एक रूप ही है। जरा-मृत्यु, धर्म-अधर्म (पुण्य-पाप) आदि भी सब के समान ही देखे जाते हैं। ब्राह्मण का श्वेत वर्ण, क्षत्रिय का लाल वर्ण, वैश्य का पीला रंग और शूद्र का काला वर्ण होता है– ऐसा प्राकृतिक नियम भी नहीं है। यदि देह को ब्राह्मण मानें तो पिता आदि के मृत शरीर को जलाने से पुत्र आदि को ब्रह्महत्या आदि पाप लगने की सम्भावना रहती है। अत: देह भी ब्राह्मण नहीं है।

'तर्हि जातिर्ब्राह्मण इति चेत्तन्न। तत्र जात्यन्त-रजन्तुष्वनेकजातिसम्भवा महर्षयो बहवः सन्ति। ऋष्यशृंगो

मृग्याः, कौशिकः कुशात्, जाम्बुको जम्बुकात्, वाल्मीको वल्मीकात्, व्यासः कैवर्तकन्यकायाम्, शशपृष्ठाद् गौतमः, वसिष्ठ उर्वश्याम्, अगस्त्यः कलशे जात इति श्रुतत्वात्। एतेषां जात्या विनाप्यग्रे ज्ञानप्रतिपादिता ऋषयो बहवः सन्ति। तस्मान्न जातिर्ब्राह्मण इति॥'

तो क्या जाति ब्राह्मण है ? नहीं, ऐसा भी नहीं हो सकता। विभिन्न जातिवाले प्राणियों से अनेक जाति वाले बहुत-से महर्षि उत्पन्न हुए है; जैसे—मृगी से ऋष्यश्रृंग, कुश से कौशिक, जम्बूक (सियार) से जाम्बूक, वल्मीक से वाल्मीकि, मल्लाह की कन्या से व्यास, शशपृष्ठ (खरगोश की पीठ) से गौतम, उर्वशी से वसिष्ठ, कलश (घट) से अगस्त्य उत्पन्न हुए—ऐसा सुना जाता है। इन में जाति के बिना भी पहले बहुत- से पूर्ण ज्ञानवान् ऋषि हुए हैं। अतः जाति ब्राह्मण नहीं है।

क्या ऐसा प्राकृतिक नियम विरुद्ध पशु-पक्षियों से पुरुष की उत्पत्ति हो सकती है ? अर्थात् यह शास्त्रों का अपवाद अन्त्यज का वर्ण संकरता को छुपाने का कथन रहस्यमय कहा जा सकता है।

'तर्हि ज्ञानं ब्राह्मण इति चेतन्न। क्षत्रियादयोऽपि परमार्थ दर्शिनोऽभिज्ञा बहव:सन्ति। तस्मान्न ज्ञानं ब्राह्मण इति॥'

तो क्या ज्ञान ब्राह्मण है ? नहीं, ऐसा भी नहीं हो सकता। बहुत से (जनक, अश्वपति आदि) क्षत्रिय आदि भी परमार्थ को जानने वाले तत्त्वज्ञ हुए हैं। अत: ज्ञान ब्राह्मण नहीं है।

'तर्हि कर्म ब्राह्मण इति चेतन्न। सर्वेषां प्राणिनां प्रारब्ध सञ्चितागामि कर्मसाधर्म्यदर्शनात्कर्माभिप्रेरिता: सन्तो जना: क्रिया: कुर्वन्तीति। तस्मान्न कर्म ब्राह्मण इति।'

तो क्या कर्म ब्राह्मण है ? नहीं, ऐसा भी नहीं हो सकता। सम्पूर्ण प्राणियों में प्रारब्ध, संचित तथा क्रियमाण कर्मों में सधर्मता देखी जाती है और कर्मों से प्रेरित होकर वे मनुष्य क्रिया करते हैं। अत: कर्म भी ब्राह्मण नहीं है। यह मानवता के प्रतीक सामाजिक व्यवस्था है।

'तर्हि धार्मिको ब्राह्मण इति चेत्तन्न। क्षत्रियादयो हिरण्यदातारो बहव: सन्ति। तस्मान्न धार्मिको ब्राह्मण इति॥'

तो क्या धार्मिक व्यक्ति ब्राह्मण है ? नहीं, ऐसा भी नहीं

हो सकता। बहुत-से क्षत्रिय आदि धर्मात्मा जन भी स्वर्ण इत्यादि का दान करनेवाले हुए हैं। अतः धार्मिक व्यक्ति ब्राह्मण नहीं है। सर्व रहस्य का सारांश यह हुआ कि जीविकोपार्जन की अक्षर विद्या, पाण्डित्य, उद्यम, धन-ऐश्वर्य, रूप, वाक्पटुता इत्यादि में ब्राह्मणत्व सिद्ध नहीं होता। विक्रय के व्यासपीठ पर बैठने, कथा करने की विद्वता में विप्र (वेद वक्ता) हो सकता है, किन्तु ब्राह्मण होना सिद्ध नहीं होता, तब उपनिषद् कथन करता है–ब्राह्मण कौन? और व्यासपीठ का अधिकारी कौन ?

'तर्हि को वा ब्राह्मणो नाम। यः कश्चिदात्मानम-द्वितीयंजातिगुणक्रिया हीनं षडूर्मिषड्भावेत्यादि सर्वदोषरहितं सत्यज्ञानानन्दानन्तस्वरूपं स्वयं निर्विकल्पमशेषकल्पाधार-मशेषभूतान्तर्यामित्वेन वर्तमानमन्तर्बहिश्चाकाशवदनुस्यूत-मखण्डानन्द स्वभावमाप्रमेयेमनुभवैकवेद्यमपरोक्षतया भासमानं करतलामलकवत्साक्षादपरोक्षीकृत्य कृतार्थतया कामरागादिदोषरहितः शमदमादि सम्पन्नभावमात्सर्य-तृष्णाशामोहादिरहितो दम्भाहंकारादिभिरसंस्पृष्टचेता वर्तत

एवमुक्तलक्षणो यः स एवं ब्राह्मण इति श्रुति स्मृति पुराणेतिहासानामभिप्रायः अन्यथा हि ब्राह्मणत्वसिद्धि-र्नास्त्येव।'

तो फिर ब्राह्मण नाम किसका है ? जो अद्वितीय आत्मा, जाति, गुण तथा क्रिया से रहित है, छः ऊर्मियों (भूख तथा प्यास (प्राण के धर्म) शोक तथा मोह (मन के धर्म), जन्म-मृत्यु (देह के धर्म) तथा छः विकारों (उत्पन्न होना, सत्तावाला दिखना, बदलना, बढ़ना, क्षीण होना तथा नष्ट होना- ये विकार है।) आदि समस्त दोषों से रहित है, सत् चित् आनन्द तथा अनन्त रूप है , स्वयं निर्विकल्प है, अनन्त कल्पों का आधार है, अनन्त प्राणियों में अन्तर्यामी रूप से रहने वाला है, सदा वर्तमान (नित्य रहने वाला) है, आकाश की तरह सबके भीतर-बाहर परिपूर्ण है, अखण्ड आनन्द स्वभाव वाला है, जो अप्रमेय है अर्थात् इन्द्रियों और अन्तःकरण का विषय नहीं है, केवल अनुभव से जानने योग्य है तथा अपरोक्ष रूप से प्रकाशित होने वाला है, उस परमात्मतत्व का हस्तामलक की तरह साक्षात्कार करके जो कृतकृत्य (ज्ञात-ज्ञातव्य, प्राप्त-

प्राप्तव्य) हो गया है और जो काम, राग आदि दोषों से रहित है और जिसका चित दम्भ, अहंकार आदि दोषों से निर्लिप्त है, वही वास्तविक ब्राह्मण है– ऐसा श्रुति, स्मृति, पुराण एवं इतिहास का अभिप्राय है। इसके सिवाय अन्य किसी भी प्रकार से ब्रह्मणत्व की सिद्धि नहीं होती।

'सच्चिदानन्दमात्मानमद्वितीयं ब्रह्म भावयेदात्मनं सच्चिदानन्दं ब्रह्म भावयेदित्युपनिषत् ॥'

आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप अद्वितीय ब्रह्म है (उसका साक्षात्कार करने वाले ही ब्राह्मण हैं) –ऐसा मानना चाहिये। आत्मा को सच्चिदानन्द स्वरूप अद्वितीय ब्रह्म का निश्चल बुद्धि से निश्चय करने वाले को ब्राह्मण (व्यास पीठ) का अधिकारी मानना चाहिये। यह उपनिषद् है।

व्यास पीठ के वक्ताओं के प्रति—

ब्रह्मवेता अहै ब्रह्मवित, ताकी वाणी वेद।
भाषा अथवा संस्कृत, करत भेद भ्रम छेद॥

जाति पाति गुण धर्म बड़ाई,
धन बल परिजन गुण चतुराई।
भक्ति हीन नर सोहई कैसा,
बिन जल वारिद देखिय जैसा॥ – रामचरितमानस

मूलधर्म साहित्य एवं व्यास पीठ के सृजेता जन्म से कतिपय शूद्र थे।

जन्म जाति के अभिमानियों ! इन महापुरुषों का साहित्य मूल सनातन धर्म का आश्रय स्तम्भ है , जो मानव मात्र का समन्वय भाव, धार्मिक जीवन सहित आध्यात्मिक प्रगति का कारक है। लोक-परलोक सुधारते हुए आलौकिक परमानन्द प्राप्ति का मानव मात्र को पूर्ण अधिकार देता है। अपनी जाति का गर्व सर्वस्व त्याग करो। इत्योम्

ब्राह्मण कौन ?

(इन्दव छन्द)

आत्मज्ञान हितार्थ साधन, तप स्वाध्याय सद्ग्रन्थ विचारे।
आध्यात्म परम्परा साधक हो नित, विनम्र हो यम नियम को धारे॥
वाणी मधुर नीति युत सात्विक, व्यापक एक ईश्वर चित वारे।
'रामप्रकाश' वही है ब्राह्मण, ब्रह्म को जान करे हित सारे॥1॥

आत्म ज्ञान प्रक्रिया को जानत, नीति के ग्रन्थ को पूर्ण माने।
वेद पुराण उपनिषद् छानत, सत-असत्य को भेद पिछाने॥
साधन सार के चार को धारत, सतगुरु सेवा को पूर्ण जाने।
'रामप्रकाश' वही है ब्राह्मण, साहित्य सनातन शास्त्र बखाने॥2॥

दूर द्रष्टि को समाज में राखत, श्रवण सुने रव आर्त जाने।
करे उपकार सदा सतकार सु, सात्विक प्रियवर आचरण आने॥
नित सतसंग आध्यात्मिक गायन, जन्म की जात को नाहिन माने।
'रामप्रकाश' वही है ब्राह्मण, कर्तव्य कर्म वर्ण को आने॥3॥

करे जप दान लेवे शुभ दान रू, हवन करे अरू और करावे।
देव गुरु गण राख मर्यादित, पितर आन को नाहिन ध्यावे ॥
तीर्थ धाम के दर्शन पावन, हरि कथा रस नित बहावे।
'रामप्रकाश' वही है ब्राह्मण, आत्म ब्रह्म को दृढ़ करावे ॥4 ॥

आत्म दृष्टि रखे सब जीव में, नाहि दुःखे अरु नाहि दुखावे।
हर्ष न शोक सदा चित आनन्द, चेतन ब्रह्म का लक्ष्य लखावे ॥
परम विवेक हो लोक परलोक में, शास्त्र भ्रम को दूर भगावे।
'रामप्रकाश' वही है ब्राह्मण, जो अहं को अभिमान हटावे ॥5 ॥

देह अभिमान को लेश न राखत, आठ हू मद को दूर निवारे।
विद्या रु जोभन जाति रु धन को, प्रभुत्व पद को गर्व विडारे ॥
रूप रु नाम रु कुल गौत्र को, वर्णाश्रम के भ्रम भेद न धारे।
'रामप्रकाश' वही है ब्राह्मण, श्रुति उपनिषद् सन्त पुकारे ॥6 ॥

उत्तम प्रकाशन जोधपुर का लोकप्रिय जनोपयोगी साहित्य

सुगम चिकित्सा - द्वितीय भाग
सुगम उपचार दर्शन
सुखराम दर्पण अर्थात् उत्तम वाणी प्रकाश
आध्यात्मिक सन्त वाणी शब्द कोष (परिशिष्ट भाग)
स्वाध्याय वेदान्त दर्शन
रामप्रकाश भजन प्रभाकर
हिन्दू धर्म रहस्य (ले. स्वामी अचलरामजी महाराज)
कामधेनु
सर्वदर्शन वाद कोश
अचलराम ग्रन्थावली (१-२-३ भाग, टीकासहित)
वेदान्त भूषण वैराग्य दर्शन
रामदेव ब्रह्म पुराण
लोकदेवता बाबा रामदेव
अन्त्येष्टि संस्कार (शव यात्रा)
सत्यवादी वीर तेजपाल
नवलाराम भजन विलास
उमाराम अनुभव प्रकाश
नित्यपाठ - नव स्तोत्र
गोरख बोध वाणी संग्रह
गीता रसायन
टीका दर्पण - संत वाणी का भाष्य
स्वप्न फल दर्शन (2500 स्वप्न का विचार)

उत्तम प्रकाशन का उत्तम साहित्य मिलने के स्थान—

1. **उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)**
   कागा मार्ग नागौरी गेट जोधपुर-342006 (राज.)

2. **रामप्रकाश आश्रम**
   रामधोरा, पो.गठीलासर वाया नागौर (राजस्थान)

3. **उत्तम आश्रम सतसंग भवन एवं छात्रावास**
   विष्णु फैक्ट्री के सामने, गोविन्दसिंह कॉलोनी,
   श्रीविजयनगर, श्रीगंगानगर (राज.)

4. **उत्तम आश्रम सतसंग भवन**
   रायसिंहनगर रोड, 87 जी.बी., अनूपगढ़ (श्री गंगानगर)

5. **किताबघर,** सोजती गेट के बाहर, जोधपुर (राज.)

6. **सरस्वती पुस्तक भण्डार**
   सैण्ट्रल बैंक के पीछे, पुरानी मण्डी, अजमेर (राज.)

7. **रत्नेश्वर पुस्तक भण्डार**
   रत्नबिहारी पार्क के सामने, स्टेशन रोड, बीकानेर (राज.)

8. **बृजलाल पटवारी,** गांव-पोस्ट ताखरांवाली,
   वाया गोलूवाला, श्री गंगानगर (राज.)

9. **शान्ति भवन,** रेल्वे स्टेशन के सामने,
   उत्तर दिशा, राजलदेसर, जिला चूरू (राज.)

भारतीय समाज दर्शन

लेखक - स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज

प्राचीन वैदिक काल से लेकर वर्तमान तक के सनातन धर्ममय सामाजिक वर्ण-व्यवस्था के सब सिद्धान्तों को इस पुस्तक रूप गागर में विशाल हिन्दू धर्म रूपी सागर भरा है। वर्ण, आश्रम के शास्त्रीय स्वरूप एवं आज के सामाजिक अध्ययन का पक्षपात रहित तुलनात्मक विवेचन लिखा है। जिसमें वेद, पुराण, उपनिषद्, इतिहास आदि पांच सौ आर्ष ग्रन्थों के सैंकड़ों उदाहरणों, टिप्पणियों में प्रचुर सामग्री द्वारा समाज के उत्थान एवं पतन की रूपरेखा का प्रमाणिक वर्णन किया गया है।
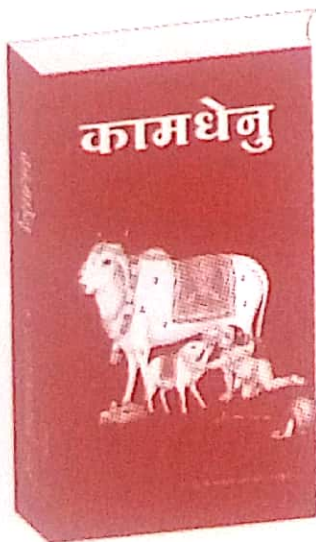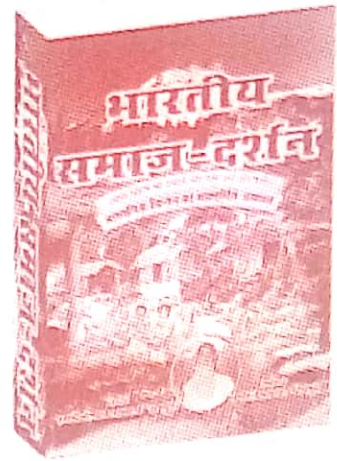
कामधेनु

आज विश्व के अग्रणी देशों में गौपालन का महत्त्वपूर्ण स्थान है एवं कहीं-कहीं पर गोवंश पर उनकी अर्थव्यवस्था टिकी हुई है। गोवंश की विभिन्न नस्लें, वैज्ञानिक दृष्टि से गो-उत्पादनों (पंचगव्य) द्वारा विभिन्न रोगों का शमन, गोवंश द्वारा आर्थिक विकास में योगदान, वर्तमान में गोवंश की स्थिति एवं विभिन्न गौ-आधारित उत्पाद बनाने की विधि सहित गौ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए गाय के हर एक पहलु का तथ्यात्मक विवेचन किया गया है, जो सर्वजन के लिए अत्युपयोगी है।

प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद

तत्त्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी 'अच्युत'

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर (राज.)

फोन /फैक्स : 0291-2547024, 9414418155

E-mail: uttamashram@gmail.com